सूरदास के पद

कविता का सार \ प्रतिपाद्य -
प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित है। यहाँ सूरदास ने श्री कृष्ण के बाल स्वरूप का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है। कृष्ण अपनी माता यशोदा से पूछते हैं कि उनकी चोटी कब बढेगी? क्योंकि कृष्ण को दूध पिलाने के लिए माता यशोदा उन्हें लम्बी चोटी का प्रलोभन देती हैं कि यदि कृष्ण दूध पी लेंगे तो उनकी चोटी उनके भ्राता बलराम की भाँति जल्दी बढ़ जाएगी। माताएँ प्रायः बालकों को इस प्रकार से तरह-तरह के प्रलोभन देकर अपनी बात मनवाती हैं। कृष्ण अपने भ्राता बलराम से बहुत प्रेम करते हैं। तभी तो उनकी तरह बनने का प्रयास करते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि सूरज की भाँति इनकी जोड़ी भी हमेशा इसी प्रकार प्रेमपूर्वक बनी रहे।
कृष्ण को माखन अत्यंत प्रिय है। माखन के लोभवश कृष्ण गोपियों के घर जाकर चुपके से माखन चुराकर खा जाते थे। इस प्रकिया में प्रायः गोपियों के माखन या बरतन की क्षति होती थी। गोपियाँ अपनी शिकायत लेकर माता यशोदा के पास जाति हैं और कहती हैं कि कृष्ण के कारण घर के सामान तथा गोरस अर्थात दूध की बहुत हानि होती है। गोपियाँ माता यशोदा से कहती है कि कृष्ण को नियंत्रित करके रखें।

कविता का भाव -
(1) कृष्ण के बालकाण्ड का अत्यंत मनोहर चित्रण हुआ है।
(2) कविता में एक बालक की मनोदशा को बहुत सुन्दर रूप से चित्रित किया गया है।
(3) कृष्ण तथा बलराम के बीच प्रेमपूर्ण सम्बंध को भी प्रस्तुत किया गया है।

कविता की भाषा शैली -
(1) कविता में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।
(2) **'पचि-पचि'** में एक ही शब्द की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(3) **'हरि-हलधर', 'मेरौ-माखन', 'दुपहर दिवस', 'दूध दहि', 'ढूँढि ढँढोरि', 'सब सखनि', 'हानि होति', 'सूर स्याम'** में एक ही वर्ण की आव़ृति एक से अधिक बार होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।
(4) **नागिन सी** में उपमा अलंकार है।
(5) कविता में वात्सल्य रस है।

कविता का उद्देश्य -
(1) भगवान श्री कृष्ण के बाल स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।
(2) बाल सुलभ चेष्टाओं का चित्रण किया गया है।

कविता का संदेश -
प्रस्तुत कविता द्वारा सूरदास जी ने माता तथा बालक के बीच के निस्वार्थ प्रेम पर प्रकाश डाला है।